माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में सौमनस्य : एक अध्ययन

डॉ. सुनीता भार्गव
प्राचार्य,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
लाल कोठी, जयपुर

सुमन लता यादव
शोधकर्त्री
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सार – प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के सौमनस्य को जानने हेतु किया गया है। अध्ययन हेतु जयपुर जिले के निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 200 अध्यापकों का चयन किया गया है। सौमनस्य के मापन हेतु डॉ. विजय लक्ष्मी चौहान द्वारा निर्मित सौमनस्य मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध के परिणाम से ज्ञात हुआ है कि निजी एंव सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के सौमनस्य में कोई अन्तर नहीं पाया गया। इस अध्ययन में टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

संकेताक्षर – माध्यमिक स्तर, निजी एवं सरकारी विद्यालय, सौमनस्य, टी टेस्ट

प्रस्तावना –

प्रत्येक विद्यालय के अन्तर्गत होने वाली समस्त शैक्षणिक गतिविधियों में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अध्यापक के बिना विद्यालय का संचालन असम्भव है। अध्यापक विद्यालय में सम्पन्न होने वाली समस्त क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु होता है। अध्यापक के बिना विद्यालय की समस्त गतिविधियां प्रभावित होती हैं साथ ही एक विद्यालय अध्यापक की अनुपस्थिति में भावशून्य व निर्जीव है । अतः अध्यापक का व्यक्तित्व, अध्यापक का व्यवहार, चरित्र, विशेष योग्यता, जीवन शैली सभी लक्षण व्यक्ति को एक अच्छा इंसान बनाने में सहायक होते हैं। शिक्षण की गुणवत्ता तथा निष्पादन की प्रमाणिकता एक अध्यापक की विशेषताओं से सहसम्बन्धित होती है।

इस प्रकार एक अध्यापक को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ तथा संतुलित व्यक्तित्व रखने वाला होना चाहिये, ताकि वह प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति कर सके। इसके लिये अध्यापक के व्यवहार में सौमनस्यता तथा व्यक्तित्व संरचना का महत्वपूर्ण स्थान होता है। सौमनस्यता शरीर तथा दिमाग दोनों के मध्य तालमेल तथा सांमजस्यता होती है। सौमनस्य युक्त अध्यापक में नकारात्मक तनाव तथा उत्तेजना का अभाव तो होता ही है साथ ही अपनी इंद्रियों पर भी नियंत्रण होता है।

सौमनस्य शब्द की अवधारणा में अभिवृत्ति, व्यवहार, विचार तथा भावनाएं जैसे आयाम होते हैं जो व्यक्ति परक, आत्मनिष्ठ तत्वों के विकास में सहायक होते हैं। सौमनस्यता से तात्पर्य है खुशी, कार्य संतुष्टि, हमारे नैतिक मूल्य तथा सकारात्मक आत्मसम्प्रत्यय सौमनस्यता के अन्तर्गत जीवन के सकारात्मक पहलू के निर्माण की क्षमता, सामान्य जीवन संतुष्टि स्तर, विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने की सकारात्मक सोच तथा अपने कार्य क्षेत्र में आकांक्षा के अनुसार उचित पद स्थिति प्राप्त करना आदि सम्मिलित होते हैं।

एक अध्यापक द्वारा अपने जीवन के क्रियाकलाप, उसकी आर्थिक स्थिति, मनोवैज्ञानिक व समाजशास्त्रीय कार्य जैसे घटक उसके व्यवसाय को प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट व्यक्ति में कार्य करने की क्षमता में सकारात्मक विचारधारा के कारण वृद्धि हो जाती है तथा वह स्वयं की तथा बालकों की प्रगति करने में सहायक होता है। अध्यापक सकारात्मक सोच के साथ क्रियाशील रह कर स्वयं के लक्ष्य का निर्धारण कर सकता है।

सौमनस्य युक्त अध्यापक के गुणों में खुशी कार्य संतुष्टि, नैतिक मूल्य सकारात्मक दृष्टिकोण आदि सम्मिलित होते हैं। वर्तमान में अध्यापकों की सौमनस्यता में दिन प्रतिदिन कमी हो रही है। सौमनस्यता में कमी होने के निम्न कारण हैं जैसे कार्यक्षमता से अत्यधिक कार्यभार हो जाना, कार्यकर्ता द्वारा यह निर्धारित कर पाना मुश्किल हो जाता है कि वह अपने कार्य को किस प्रकार पूर्ण करेगा, सहकर्मियों के साथ स्वस्थ सम्बन्ध न स्थापित हो पाना, अपने कार्य को समझने तथा अपेक्षाओं के अभाव में कार्य पूर्ण नहीं कर पाना, संस्थागत परिवर्तनों के साथ सम्बन्ध न स्थापित कर पाना आदि कारण अध्यापकों की सौमनस्यता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

शोध में प्रयुक्त विधि – शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 200 अध्यापकों को लिया गया है।

उद्देश्य – निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में सौमनस्य का अध्ययन करना

अनुसंधान के उपकरण – प्रो. डॉ. विजय लक्ष्मी चौहान द्वारा निर्मित सौमनस्य मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी – प्रस्तुत अध्ययन में माध्य, मानक विचलन एवं टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना – माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के सौमनस्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

निजी एवं सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का सौमनस्य

	विद्यालय	(N)	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
सौमनस्य	निजी	100	201.59	22.707	0.892
	सरकारी	100	204.17	17.911	

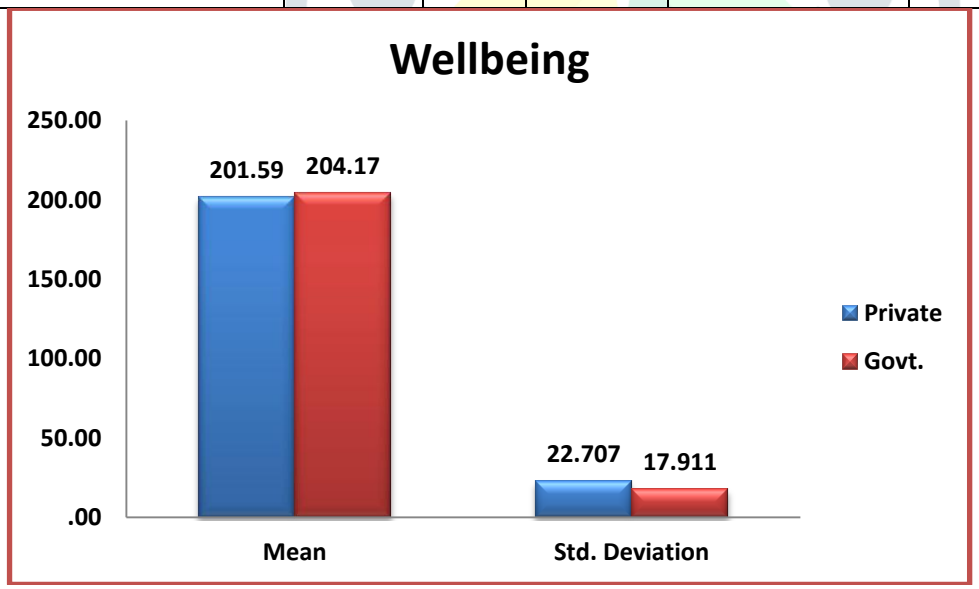

विश्लेषण – सारणी में विद्यालय के आधार पर निजी एवं सरकारी अध्यापकों को लिया गया है। निजी एवं सरकारी अध्यापकों की संख्या 100–100 है। निजी विद्यालय के अध्यापकों के सौमनस्य का मध्यमान 201. 59 है एवं सरकारी विद्यालय के अध्यापकों के सौमनस्य का मध्यमान 204.17 है। निजी एवं सरकारी विद्यालय के अध्यापकों का मानक विचलन क्रमशः 22.707 तथा 17.911 है। टी का मान 0.892 है जो कि 0.01 स्तर पर 2.59 तथा 0.05 स्तर पर 1.96 से कम है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

व्याख्या – तालिका से स्पष्ट है माध्यमिक स्तर के निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के सौमनस्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। इस प्रकार निजी व सरकारी अध्यापकों के सौमनस्य में विद्यालयी परिवेश के आधार पर अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष – प्रत्येक अध्यापक स्वयं अपनी धारणाओं विश्वासों मनोवृत्तियों के आधार पर अपने सौमनस्य को निर्धारित करता है। शिक्षण व्यवसाय के अन्तर्गत अध्यापक के सौमनस्य को कई कारक प्रभावित करते हैं जैसे कार्य क्षमता से अधिक कार्य भार, सह कर्मियों के साथ स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित न कर पाना आदि किन्तु शोध के निष्कर्ष में यह पाया गया कि निजी व सरकारी विद्याालयों में कार्यरत अध्यापकों के सौमनस्य में अन्तर नहीं पाया जाता है। अध्ययन में विद्यालयी परिवेश निजी व सरकारी के आधार पर अध्यापकों के सौमनस्य में अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ–

- Anderson, F.M. and Withy, S.B.(1976) Social indicators of wellbeing America perception of life quality. New York : Plenum Press.
- Best, John W. and Khan, James V. (1986) "Research in education", Vth edition, New Delhi : Prentice half of India Pvt. Ltd.
- Brandburn, N. M.(1969) The structure of psychological well being Chicago: Aldine Publication.
- Eddin, G. and Golanty (1992) Health and wellness a holistic approach London : Jones and Bartlett Publisher.
- राय, पारसनाथ (1993) अनुसंधान परिचय, आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
- शर्मा, आर. ए. (2011) शिक्षा मापन के मूल तत्व एवं सांख्यिकी, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो
- सिंह, गया (2009) प्राथमिक एवं उच्च सांख्यिकीय विधियां, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो